ISSN: 2393-8048
Venue: Sant Shri Prannath Parnami PG College, Padampur
15 Dec 2019

असंगठित क्षेत्र में महिला कामगारों की स्थिति

Rashmi Khobragade, Research Scholar, Department of Sociology, Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth University Udaipur, Rajasthan

सारांश

असंगठित क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था में रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएँ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कार्यरत हैं। घरेलू कामगार, कृषि श्रमिक, निर्माण श्रमिक, सड़क विक्रेता, कुटीर एवं लघु उद्योगों में कार्यरत महिलाएँ तथा अन्य अस्थायी श्रमिक इस क्षेत्र का प्रमुख हिस्सा हैं। इसके बावजूद महिला कामगारों को रोजगार की अस्थिरता, कम एवं अनियमित मजदूरी, सामाजिक सुरक्षा के अभाव, कार्यस्थल पर असुरक्षित परिस्थितियों तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं जैसी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अनेक महिलाओं के श्रम का स्वरूप अनौपचारिक होने के कारण उनके कार्य को उचित आर्थिक एवं सामाजिक मान्यता भी नहीं मिल पाती। पारिवारिक जिम्मेदारियों और घरेलू कार्यों का अतिरिक्त बोझ उनके आर्थिक अवसरों तथा कार्य-भागीदारी को प्रभावित करता है। शिक्षा, कौशल, वित्तीय संसाधनों और रोजगार के अवसरों तक सीमित पहुँच भी उनकी स्थिति को प्रभावित करती है। सरकारी योजनाओं एवं श्रम कानूनों के माध्यम से सामाजिक सुरक्षा, मातृत्व लाभ, न्यूनतम मजदूरी और सुरक्षित कार्य-परिस्थितियाँ उपलब्ध कराने के प्रयास किए गए हैं, किंतु इनके प्रभावी क्रियान्वयन और व्यापक पहुँच की आवश्यकता बनी हुई है। अतः महिला कामगारों की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए सामाजिक सुरक्षा, कौशल विकास, समान पारिश्रमिक, सुरक्षित कार्यस्थल तथा संस्थागत सहायता को सुदृढ़ करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द: असंगठित क्षेत्र, महिला कामगार, महिला श्रम, रोजगार, मजदूरी, सामाजिक सुरक्षा, लैंगिक असमानता, श्रम अधिकार।